टिप्पणी

19

भारत पाकिस्तान युद्ध (1971)

1971 का भारत-पाक युद्ध स्वतंत्रता पश्चात पाकिस्तान के साथ हुआ तीसरा युद्ध है हालांकि इस बार इस युद्ध के कारण पिछले दो युद्धों से अलग थे। आप यह जानते हैं कि देश के विभाजन के समय पाकिस्तान के दो हिस्से थे- पूर्वी तथा पश्चिमी। इन दो भागों के बीच लगभग 1000 मील की दूरी थी। इन दोनों भागों के बीच केवल एक ही देश भारत आता है।

पश्चिमी भाग, वर्तमान में पाकिस्तान है जिसकी राजधानी व सरकार इस्लामाबाद में है। वहीं पूर्वी पाकिस्तान की राजधानी ढाका थी। पूर्वी पाकिस्तान के लोग पश्चिमी पाकिस्तानियो से नाखुश थे इसलिए उन्होंने विद्रोह करना प्रारंभ कर दिया। भारत ने पूर्वी पाकिस्तान की मुक्ति वाहिनी की सहायता की। इसी कारण 1971 का युद्ध हुआ। पहली बार किसी युद्ध में भारतीय थल सेना, नौसेना और वायु सेना ने एक साथ मिलकर युद्ध लड़ा। सेना के तीनों अंगों ने इस युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय मदद के कारण ही बांग्लोदश का जन्म हुआ।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- 1971 के युद्ध के कारण जान सकेंगे; और
- युद्ध के मुख्य ऑपरेशनों का वर्णन कर सकेंगे।

19.1 भारत व पाकिस्तान ने 1971 का युद्ध क्यों लड़ा?

भारत द्वारा 1971 के युद्ध लड़ने के कारणों को समझना बहुत जरूरी है। पूर्वी पाकिस्तान में अधिकतर लोग बंगाली मुस्लिम थे। पाकिस्तान में विकास कार्य पश्चिमी पाकिस्तान में केंद्रित रहे और पूर्वी पाकिस्तान की अवहेलना हुई। 1970 के स्थानीय चुनावों में एक नई पार्टी-आवामी लीग सत्ता में आई। इसके पश्चात् लोग अधिक स्वतंत्रता और प्राकृतिक संसाधनों पर आधिपत्य चाहने लगे। यहाँ आप पाकिस्तान की राजनीतिक व्यवस्था को याद कर सकते हैं। आजादी के पश्चात् से ही पाकिस्तानी सरकार शासन के लिए पाकिस्तानी फौज पर निर्भर रहती है। युद्ध के समय पाकिस्तान फौजी जनरल यह्या खान के अधीन था। इसने जनरल अयूब खान से सत्ता प्राप्त की थी।

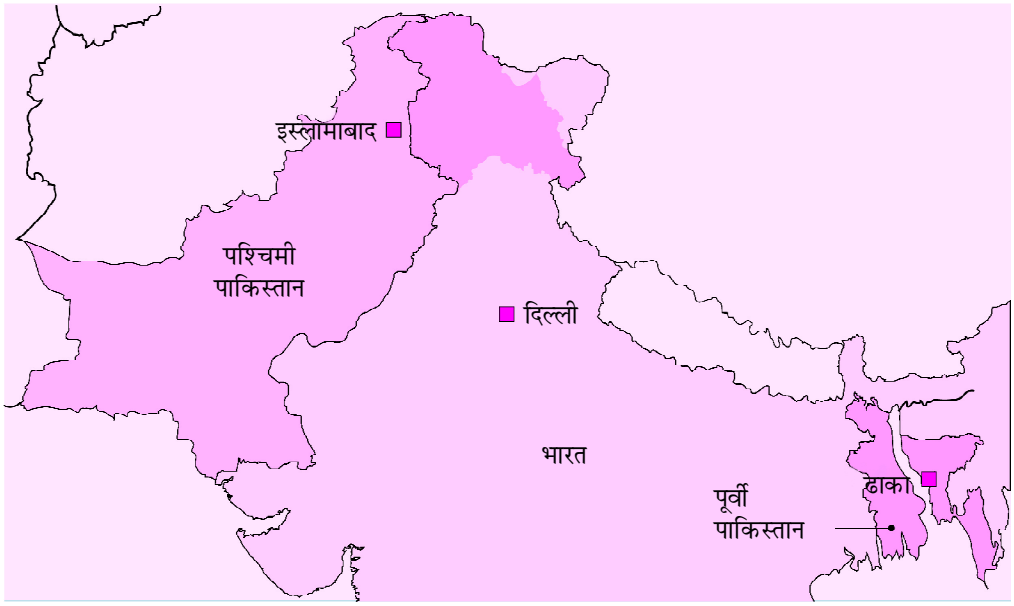

मानचित्र 19.1 पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान का मानचित्र

पाकिस्तान के फौजी शासक यह्या खान ने न केवल राष्ट्रीय असेंबली (National Assembly) को भंग किया अपितु जीती हुई पार्टी आवामी लीग को भी सरकार नहीं बनाने दी। दूसरे शब्दों में, पश्चिमी पाकिस्तान ने पूर्वी पाकिस्तान ने बंगालियों की अधिक राजनीतिक शक्ति की मांग को ठुकरा दिया। सेना ने वहां के अवामी लीग के नेता शेख मुजीबुर रहमान को मार्च 1971 में गिरफ्तार कर सैन्य शासन थोप दिया। उन्होंने वहाँ लोगों पर अत्याचार करने प्रारंभ कर दिए। हजारों की संख्या में शरणार्थी भारत में आने लगे, जिसमें एक बड़ी समस्या खड़ी हो गयी। पाकिस्तानी सेना के अत्याचार और उनके द्वारा बंगालियों की मांगे न मानने पर मुक्ति वाहिनी का जन्म हुया। मुक्ति वाहिनी का अर्थ है स्वतंत्रता सेनानियों की टोली, जिन्होंने पाकिस्तानी सेना के खिलाफ सशस्त्र लड़ाई लड़ी।

मुक्ति वाहिनी क्या है और इसकी स्थापना का क्या कारण था?

मुक्ति वाहिनी एक सशस्त्र मुक्ति संघर्ष आंदोलन था जो पूर्वी पाकिस्तान में प्रारंभ हुआ। ये लोग पश्चिमी पाकिस्तान के दमन का विरोध कर रहे थे। इसका कारण था कि स्थानीय आम चुनावों में जीत के बाद भी पश्चिमी पाकिस्तान ने आवामी लीग की सरकार नहीं बनने दी और आवामी लीग के नेता शेख मुर्जीबुर रहमान को गिरफ्तार कर लिया गया।

पाकिस्तानी सेना द्वारा लोगों की बड़े स्तर पर हत्या करना 'नरसंहार' कहलाया। पाकिस्तानी सेना के नरसंहार के भय से उनके अपने ही देश के लगभग 10 मिलियन लोग घबराकर पूर्वी पाकिस्तान से शरणार्थी के रूप में भारत आ गए। चित्र 19.1 उन लोगों को प्रदर्शित करता है जो पूर्वी पाकिस्तान से भारत आए थे।

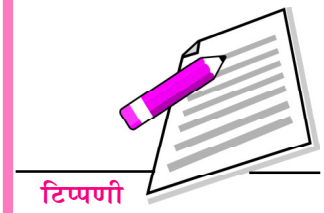

नरसंहार क्या है?

नरसंहार - समाज के एक वर्ग के लोगों की हत्या। यह हत्या सत्ताधारी पार्टी द्वारा अपनी सत्ता बचाने के लिए की जाती है।

इस युद्ध के निम्नलिखित कारण थे।

1. चुनी हुई पार्टी आवामी लीग को सरकार नहीं बनाने दी गई। इस संगठन को प्रतिबंधित भी कर दिया गया था।
2. सैनिक शासन थोप दिया गया था। सेना द्वारा किए गए अत्याचारों से काफी संख्या में बंगाली लोग मारे गए।
3. बंगाली वहाँ से अपनी जान बचाकर भागे। 10 मिलियन शरणार्थी असम और पश्चिम बंगाल में आ गए। इससे भारत में आर्थिक संकट पैदा हो गया।
4. पूर्वी पाकिस्तान में आम हड़ताल शुरू हो गई। पाकिस्तानी सेना को जवाब देने के लिए मुक्ति वाहिनी का गठन हुआ।
5. भारत ने पूर्वी पाकिस्तान की आजादी के लिए हुए आंदोलन को खुलकर सहयोग दिया।

पाठगत प्रश्न 19.1

1. पूर्वी पाकिस्तान के आंदोलन में भारत के शामिल होने के कोई दो तत्कालिक कारण लिखिए।
2. युद्ध के समय पाकिस्तान में सैनिक शासक कौन था?
3. आवामी लीग क्या है? इसका नेता कौन था?
4. मुक्ति वाहिनी का दूसरा नाम क्या है और इसका गठन क्यों हुआ था?

19.1.1 किस प्रकार बांग्लादेश आजाद हुआ?

आइए इस प्रश्न को एक-एक कर समझने का प्रयास करते हैं? यह युद्ध कहाँ और किस प्रकार शुरू हुआ? इस युद्ध में भारत के क्या उद्देश्य थे?

- इस युद्ध की शुरूआत 3 दिसंबर 1971 को हुई थी। इस दिन पाकिस्तान वायु सेना ने भारत के पश्चिमी भाग पर आक्रमण किया और अगले दिन भारत ने पाकिस्तान पर युद्ध की घोषणा कर दी। और पाकिस्तान पर हवाई हमले किए। किंतु युद्ध शुरू होने से पहले ही भारत सरकार ने अपनी सेना की पूर्वी कमांड को तैयार रहने के निर्देश दे दिए थे। ये निर्देश अप्रैल व मई 1971 में दिए गए थे। इस कमांड को मुक्ति वाहिनी सेना को प्रशिक्षण देना था जो कि गुरिल्ला युद्ध पद्धति से पाकिस्तानी फौज का मुकाबला कर रही थी।

- **सैन्य बल के लक्ष्य :** भारतीय सेना के दो मुख्य काम ये थे-
  - पूर्वी पाकिस्तान को पश्चिमी पाकिस्तान के शासन से आजादी दिलाना।
  - यह ध्यान देना कि पाकिस्तान इस युद्ध का फायदा उठाकर जम्मू व कश्मीर में आतंकवाद को न फैलने दे।

सैन्य दृष्टिकोण से उद्देश्यों के दो अर्थ थे। एक पूर्वी पाकिस्तान की राजधानी ढाका पर कब्जा करना था और दूसरा पाकिस्तान के किसी भी हमले के खिलाफ पश्चिमी सीमाओं की रक्षा करना था। आपने पिछले पाठों में पढ़ा होगा कि भारत का विभाजन अधूरा था क्योंकि कश्मीर दोनों देशों के बीच एक विवादास्पद मुद्दा था। इसलिए पाकिस्तान को कश्मीर में प्रवेश करने के अवसर का उपयोग करने से रोकना भी युद्ध का दूसरा उद्देश्य था। भारतीय सशस्त्र बलों ने यृद्ध की तैयारी शुरू कर दी। युद्ध के लिए प्रशिक्षण गोला-बारूद और जवानों के लिए, हथियार कपड़ों का इंतिज़ाम बहुत सावधानी से किया गया था। थल सेनाध्यक्ष, फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ ने कोई भी ऑपरेशन शुरू करने से पहले मानसून के खत्म होने का इंतजार किया। दिसंबर 1971 तक भारतीय सशस्त्र बल पूरी तरह से तैयार हो गए।

पाकिस्तान ने क्या किया? पश्चिमी पाकिस्तान की राजनीतिक पार्टियों ने क्रश इंडिया (Crush India) नाम का अभियान प्रारंभ किया।

भारतीय सेना की युद्ध की तैयारी देखते हुए पाकिस्तान ने अचानक 3 सितंबर 1971 को हवाई हमला कर दिया। पाकिस्तानी वायु सेना ने भारत में अंबाला (हरियाणा में स्थित) अमृतसर (पंजाब) में स्थित और जम्मू व कश्मीर में उधमपुर में हवाई पट्टियों को निशाना बनाया। इस हमले का कोड ऑपरेशन 'चंगेज खान' था। इसी से अधिकारिक तौर पर दोनों देशों के मध्य युद्ध की शुरूआत हुई। इसके बाद भारत ने भी हमले का जवाब दिया। युद्ध की शुरूआत में पाकिस्तान ने अपनी रणनीति ''भारत की वायु सेना को नुकसान पहुँचाकर अपना प्रभुत्व स्थापित करने'' पर काम करना शुरू किया। ताकि उनके हवाई जहाज बिना किसी रोक टोक के भारतीय सीमा में आ सकें। किंतु भारतीय वायुसेना के मुँहतोड़ जवाब से पाकिस्तान की रणनीति असफल हो गई। भारतीय वायु सेना ने हंटर विमानों का प्रयोग करके पाकिस्तान पर हमला किया।

पाठगत प्रश्न 19.2

1. भारत पाकिस्तान युद्ध कब शुरू हुआ था?
2. 1971 के युद्ध में भारत के क्या लक्ष्य थे?
3. 'ऑपरेशन चंगजे खान' का क्या अभिप्राय है?

19.2 युद्ध के मुख्य ऑपरेशन

आइए युद्ध के मुख्य ऑपरेशन जानने से पहले इस युद्ध में शामिल मुख्य व्यक्तियों की जानकारी प्राप्त करते हैं। भारत की तरफ से प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और रक्षा मंत्री बाबू जगजीवन राम थे। सेना का नेतृत्व जनरल एस. एच. जे. एफ. मानेक्शॉ, नौसेना के अध्यक्ष एडमिरल एम. एम. नंदा और वायु सेना के मुखिया पी. सी. लाल थे। पाकिस्तान की ओर से जनरल यह्या खान वहाँ के सैन्य शासक थे। उनके पूर्वी कमांड के मुखिया लेफ्टिनेंट जनरल ए. ए. के. नियाजी थे। इन्हीं को पूर्वी पाकिस्तान का दायित्व दिया गया था। भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भारतीय सेना को पाकिस्तानी हमले का जवाब देने का आदेश दिया। यह आदेश जनरल सैम मानेकशॉ (बाद में फील्ड मार्शल) को दिया गया था। भारतीय सेना के तीनों अंगों ने मिलकर एक साथ कार्य किया। आइए इनके बारे में जानते हैं।

19.2.1 हवाई हमले

दोनों मोर्चों पर युद्ध का एक उल्लेखनीय पहलू यह है कि भारतीय सेना के तीनों अंगों ने मिलकर सुचारू रूप से अपना कार्य किया। भारतीय वायुसेना ने थल सेना को हवाई सुरक्षा प्रदान की। भारतीय वायुसेना पूर्वी व पश्चिमी दोनों मोर्चों अपना वर्चस्व सफलतापूर्वक जमा पाई। भारतीय वायुसेना ने मिग-21, केनबेरा, हंटर, गनेट और अन्य हवाई जहाजों का प्रयोग किया था। पाकिस्तानी वायु सेना के पास एफ-86 सैबर जेट, एफ 104 स्टार फाईटर आदि थे। मिग 21 की शानदार व महत्वपूर्ण भूमिका के कारण भारतीय वायु सेना थल सेना को हवाई सुरक्षा देकर दुश्मन को हरा पाई।

पाठगत प्रश्न 19.3

1. युद्ध के समय भारत का रक्षामंत्री कौन था?
2. युद्ध के समय भारतीय सेना के चीफ का नाम लिखिए?
3. 1971 में पाकिस्तानी पूर्वी कमांड की बागडोर किसके पास थी?
4. 1971 के युद्ध में प्रयुक्त हुए प्रमुख हवाई जहाजों के नाम लिखिए।

19.2.2 धरातल पर हुए ऑपरेशन

(क) पूर्वी मोर्चा - जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि यह युद्ध दो मोर्चों पर हुआ था। पश्चिमी मोर्चे पर पंजाब-जम्मू सीमा थी और पूर्वी मोर्चे पर पूर्वी पाकिस्तान था। भारतीय सेना ने योजना बनाकर पूर्वी पाकिस्तान पर चारों ओर से हमला किया। चित्र में हर तीर भारतीय पैदल सेना की इन्फैन्टरी डिवीजन को दर्शाता है।

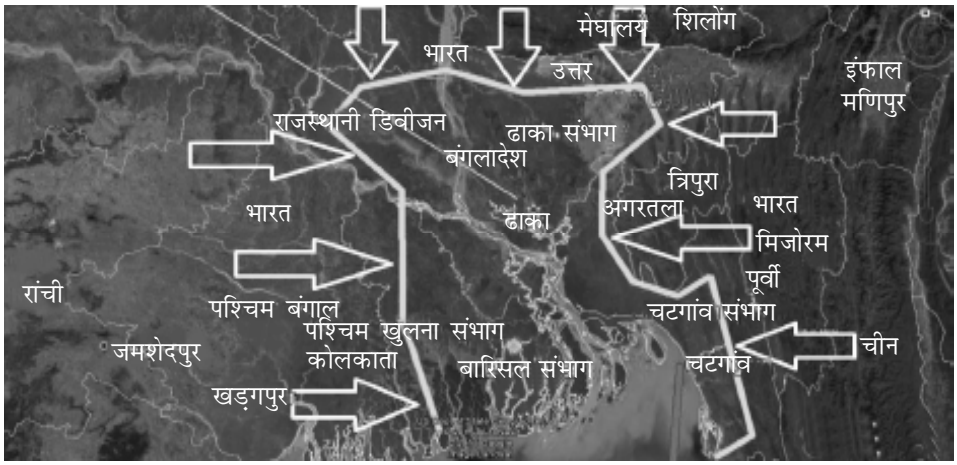

मानचित्र 19.2 : भारतीय सेना का पूर्वी पाकिस्तान में हमला

भारतीय सेना की युद्ध नीति तीव्र थी। इस युद्ध में 9 पैदल सैन्य टुकड़ियाँ जिनके पास बख्तरबंद गाड़ियाँ और हवाई सुरक्षा थी। वे तेजी से ढाका के भीतर घुस गई। इस सेना का नेतृत्व भारत के जनरल आफिसर कमांडिंग इन चीफ लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह कर रहे थे जिन्होंने ढाका पर कब्जा कर लिया। ढाका पर कब्जा होने के पश्चात् भारतीय सेना के समक्ष पाकिस्तानी सेना ने 16 दिसंबर 1971 को समर्पण कर दिया। केवल 13 दिनों के भीतर पाकिस्तानी सेना परास्त हो गई। हमने 90000 से ज्यादा युद्ध बंदी बना लिए।

तालिका 19.1 को देखकर आप यह आँकड़ा जान सकते हैं।

आंतरिक सेवा ब्रांच	**युद्धबंदी बनाए गए पाकिस्तानियों की संख्या**	**कमांडिंग अफसर**
पाकिस्तान सेना	54,154	लेफ्टिनेंट जनरल अमीर अब्दुल्ला खान नियाजी
पाकिस्तान नौसेना पाकिस्तानी वायु सेना	1,381	रियर एडमिरल मोहम्मद शरीफ
पाकिस्तान वायु सेना	833	एयर कामडोर इनामुल हक
अद्धसैनिक/पूर्वी पाकिस्तान राइफल्स/पुलिस	22,000	मेजर जनरल राव फरमान अली
सरकारी अधिकारी	12,000	गर्वनर अब्दुल मोतलब मलिक
कुल	**90,368**	

(ख) पश्चिमी मोर्चा – पश्चिमी मोर्चे पर मुख्य युद्ध पंजाब, जम्मू व कश्मीर और राजस्थान में हुए। पाकिस्तान ने पहले पुंछ और छम्ब में हमला किया। पुंछ पर हमला तीन दिन में समाप्त हो गया। छम्ब में भी इंडियन 10 इंफैंट्री डिवीजन ने शौर्य और बहादुरी से

युद्ध लड़ा। पाकिस्तान ने मंडीयाला चोटी पर कब्जा कर लिया। किंतु पाकिस्तानी सेना को इतनी क्षति पहुँची कि वे वापस लौट आए और भारतीय सेना ने वापिस कब्जा कर लिया। भारतीय सेना ने कारगिल की कुछ ऊँची चोटियों पर भी कब्जा कर लिया। पंजाब में पठानकोट के सामने शकरगढ़ में हमला हुआ था। आप मानचित्र 19.3 में शकरगढ़ के युद्ध स्थल को देख सकते हैं।

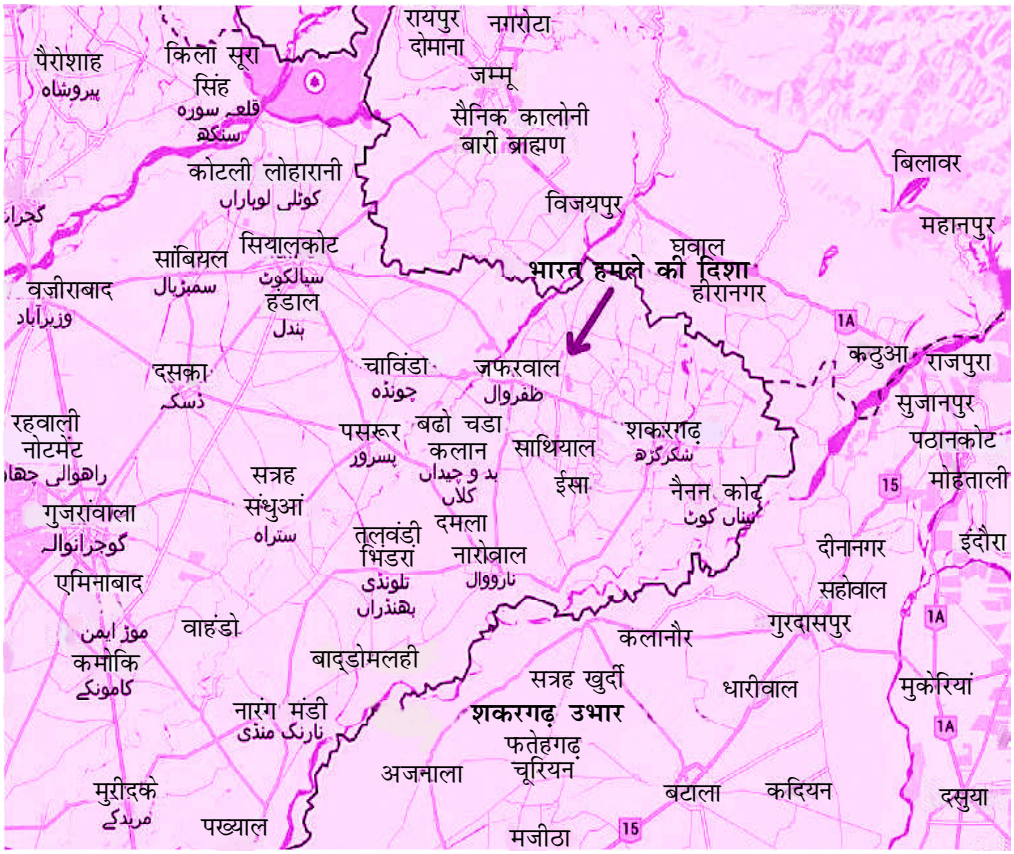

मानचित्र 19.3 : शकरगढ़ का युद्ध

राजस्थान सेक्टर में पाकिस्तान ने लौंगवाल पर हमला किया। भारतीय सेना के जवाब से पाकिस्तानी सेना ने अपने कदम पीछे खींच लिए। उस समय भारतीय वायुसेना के हंटर जहाजों ने पाकिस्तानी टैंकों को ध्वस्त कर दिया। भारतीय हमले ने कस्बा नया छोर पर भी कब्जा कर लिया।

19.2.3 नौसेना ऑपरेशन

इस युद्ध में नौसना ने भी अपनी बहादुरी का परिचय दिया। भारतीय नौसेना की पश्चिमी, दक्षिणी और पूर्वी नौसेना कमांड को युद्ध जीतने में प्रयोग किया गया। नौसेना युद्ध के दो ऑपरेशन बेहद महत्वपूर्ण थे। ये थे ऑपरेशन ट्राइडेंट (Trident) और आपरेशन पायथन (Python) । ये दोनों आपरेशन पश्चिमी मोर्च पर पाकिस्तान की कराची बंदरगाह को निशाना बनाने के लिए किए गए थे। इन हमलों का लक्ष्य कराची बंदरगाह को तबाह करना था। इसी

बीच भारतीय नौसेना के पश्चिमी कमांड के वाइस एडमिरल एस. एन. कोहली के नेतृत्व में 4 और 5 दिसंबर 1971 को अचानक हमला कर दिया। इस हमले का कोड नाम था ऑपरेशन ट्राइडेंट (Trident)। इस हमले में आईएनएस निपट, आईएनएस निरघट और आईएनएस वीर का मिसाईलों के साथ प्रयोग हुआ था। चार दिन बाद एक अन्य ऑपरेशन पाइथन की शुरूआत हुई। यह दोनों ऑपरेशन पाकिस्तानी जलपोतों को नष्ट कर पाए जिससे वे भारतीय नौसेना पर हमला नहीं कर सके।

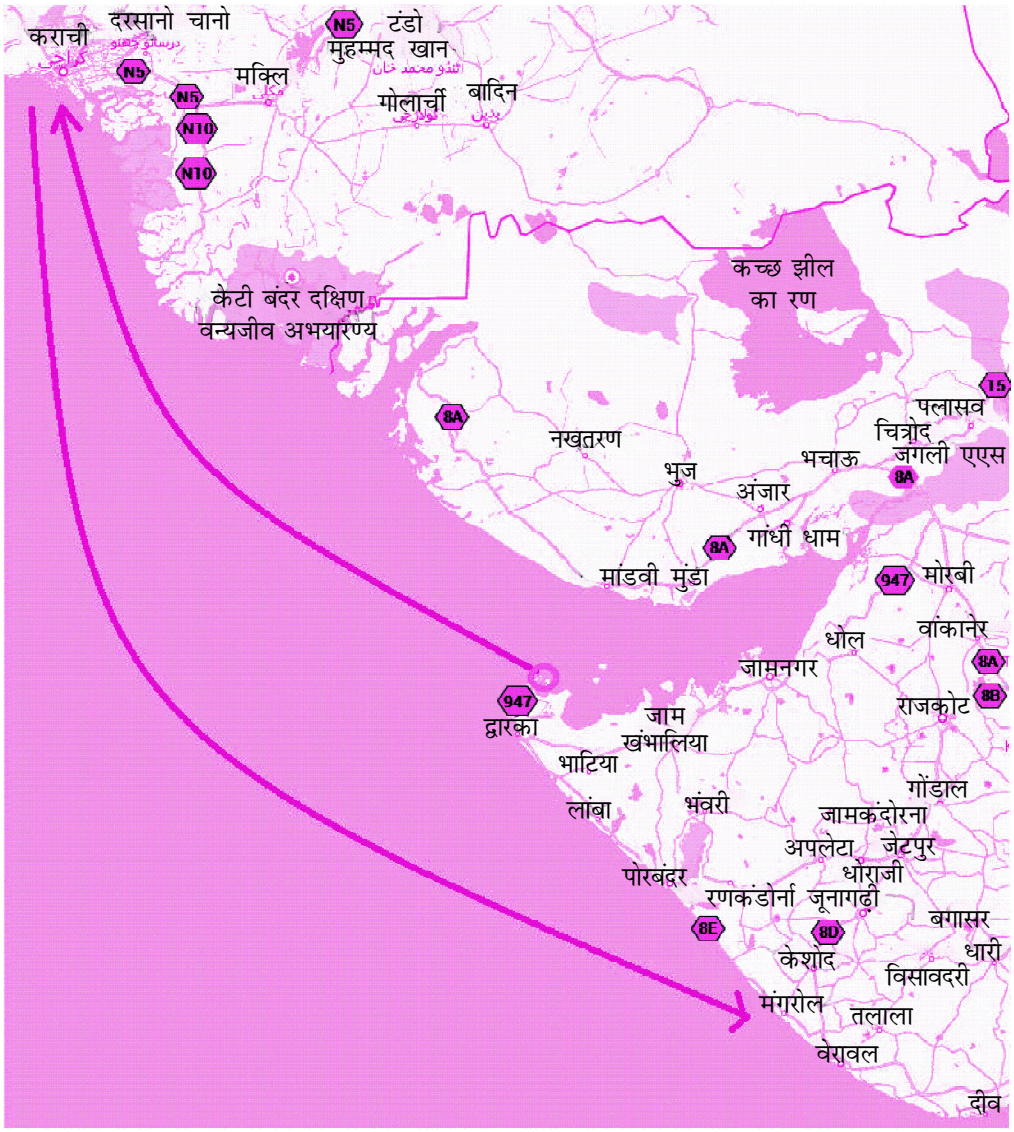

मानचित्र 19.4 : ऑपरेशन ट्राइडेंट

पूर्वी क्षेत्र पर भी भारतीय नौसेना ने अपने शौर्य का परिचय दिया। इस मोर्चे से हमले का उद्देश्य पाकिस्तान को चित्तगौंग बंदरगाह का प्रयोग करने से रोकना था। इस कारण भारतीय नौसेना ने बंगाल की खाड़ी में अपना एकमात्र हवाई जहाज युक्त INS विक्रांत को स्थापित किया। भारतीय पूर्वी नौसेना टुकड़ी ने वाइस एडमिरल एन. कृष्णन के अंतर्गत पूर्वी पाकिस्तान की सभी बंदरगाहों को सफलतापूर्वक अलग-थलग कर दिया और घेराबंदी से सभी बंदरगाहों की

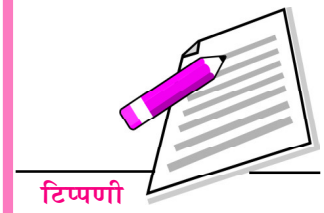

नाकाबंदी कर दी। INS विक्रांत के अलावा INS गुलदार, INS घड़ियाल, INS मगर और अन्य पनडुब्बियों ने इन आपरेशनों में भाग लिया।

पाठगत प्रश्न 19.4

1. भारतीय सेना ने अपनी सेना के कितने डिवीजन 1971 युद्ध के दौरान पूर्वी मोर्चे पर प्रयुक्त किए थे?
2. भारत की पूर्वी सेना कमांड के कमांडर का नाम लिखिए?
3. 1971 के युद्ध में पश्चिमी मोर्चे पर हुए दो प्रमुख नौसेना आपरेशन के नाम लिखिए।
4. 'ऑपरेशन ट्राईडेंट' का उद्देश्य बताइए?
5. INS विक्रांत क्या है?
6. भारत के पूर्वी तथा पश्चिमी नौसेना कमांडरों के कमांडर का नाम लिखिए।

19.2.4 युद्ध का अंत

आप जानते हैं कि यह एक छोटा युद्ध था जो मात्र 13 दिन चला। सभी मोर्चों पर भारत ने अपने नेतृत्व चाल, साजोसामान और निपुणता पर भरोसा करके शत्रु की कमजोरियों का फायदा उठाकर सफलता प्राप्त की। पाकिस्तानी फौज भारतीय सेना का मुकाबला पहले दिन से नहीं कर पायी। पाकिस्तानी फौज में बुद्धि, रणनीति और युद्ध कौशल की कमी थी। उनका नैतिक बल भी कम था और लड़ाई की तैयारी भी कम थी। इसलिए 15 दिन के भीतर उनको बहुत नुकसान हुआ और युद्ध का अंत हो गया। लेफ्टिनेंट जनरल ए.ए.के. नियाजी के नेतृत्व में पाकिस्तानी पूर्वी कमांड में डर का माहौल था।

भारतीय सेना ने पाकिस्तानी फौज को पछाड़कर 16 दिसंबर को ढाका की घेराबंदी कर ली। जनरल ए.ए.के.नियाजी को आत्मसमर्पण करने की अंतिम चेतावनी दी गई। उन्होंने बिना शर्त समर्पण कर दिया। यह समर्पण उन्होंने लेफ्टिनेंट जनरल जे.एस. अरोड़ा (चित्र 19.2) के सम्मुख किया। इसी दिन पाकिस्तान ने एक तरफा सीजफायर की घोषणा कर दी और अपनी पूरी सेना का भारत के आगे समर्पण कर दिया। 93000 सैनिकों को युद्ध बंदी बनाकर युद्ध का अंत हो गया। इस प्रकार पूर्वी पाकिस्तान आजाद हो गया और 'बांग्लादेश' नाम से एक नए देश का उदय हुआ।

चित्र 19.2 : लेफ्टिनेंट जनरल ए.ए.के. नियाजी बिना शर्त समर्पण करते हुए

क्रियाकलाप 19.1

1971 के परमवीर चक्र विजेताओं के नाम व चित्र खोजें तथा उनकी बटालियन व युद्ध स्थल के नाम का भी उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्न 19.5

1. पाकिस्तानी फौजों ने पूर्वी पाकिस्तान में आत्मसमर्पण कब किया?
2. बिना शर्त आत्मसमर्पण पत्र पर किसने हस्ताक्षर किए?
3. युद्ध का क्या परिणाम निकला?
4. युद्ध से क्या सीखने को मिला?

आपने क्या सीखा

- यदि कोई सरकार जनता की बात व समस्याएँ नहीं सुनती तो वह सरकार असफल हो जाती है।
- इस युद्ध से यह सिद्ध होता है कि पाकिस्तान की सरकार पूवी पाकिस्तान में अपनी आंतरिक राजनीतिक समस्याएँ का हल नहीं ढूंढ़ पायी। जिसके कारण इस युद्ध में भारत को कूदना पड़ा।

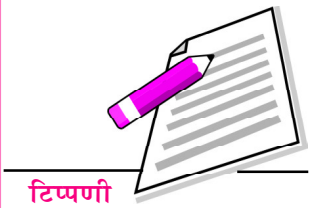

- आप यह भी जानते हैं कि युद्ध जीतने के लिए प्रभावी नेतृत्व और अच्छी युद्ध सामग्री होनी आवश्यक है।
- दृढ़ संकल्प भी युद्ध के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए लोगेवाला के युद्ध के दौरान भारतीय सेना ने अपने संकल्प से शत्रु का प्रतिरोध जारी रखा और सफल रही। सेना के तीनों अंगों का आपसी तालमेल भी भारत को युद्ध जिता पाया।
- भारत के लिए यह एक उपलब्धि थी और युद्ध में सीखी गई बातें आज भी उतनी ही उपयोगी हैं।
- राष्ट्रीय शक्ति का भी होना भी बेहद आवश्यक है। यदि पूरा देश एकजुट हो तो कोई नहीं हरा सकता।

पाठांत प्रश्न

1. भारत के 1971 के युद्ध में भाग लेने के कारण लिखिए?
2. 1971 के युद्ध में नौसेना द्वारा लड़े गए मुख्य युद्धों का वर्णन कीजिए।
3. लोगेंवाला युद्ध का क्या महत्व था?
4. इस युद्ध में भारत की जीत के कारणों का उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1

1. पाकिस्तानी फौज ने बंगालियों का नरसंहार किया और बड़ी संख्या में शरणार्थी भारत आ गए।
2. जनरल यह्वा खान
3. आवामी लीग राजनीतिक पार्टी थी और उसके नेता शेख मुर्जीबुर रहमान थे।
4. मुक्ति वाहिनी का अन्य नाम स्वतंत्रता सेनानी था।

19.2

1. युद्ध का प्रारंभ 3 दिसंबर 1971 को हुआ जब पाकिस्तानी वायु सेना ने भारत पर हवाई आक्रमण किए।
2. युद्ध का अंतिम लक्ष्य पूर्वी पाकिस्तान को आजादी दिलाना था। साथ ही इसके लिए ढाका पर कब्जा करना और पाकिस्तान को पश्चिमी मोर्चे से भारत में घुसने से रोकना था।

3. ऑपरेशन चंगेज खान का प्रारंभ पाकिस्तान ने किया था। यह ऑपरेशन भारत के पश्चिमी मोर्च पर हवाई हमले करने से संबंधित था।

4. हवाई श्रेष्ठता का अर्थ हवाई हमलों से शत्रु के हवाई क्षेत्रों को ध्वस्त करके उनकी हवाई पट्टियों को अपने कब्जे में लेना है जिसमें शत्रु की वायु सेना कोई प्रतिरोध न कर सके।

19.3

1. 1971 के युद्ध के समय बाबू जगजीवन राम भारत के रक्षा मंत्री थे।
2. सेना के चीफ आफ आर्मी स्टाफ एस.एच.जे.एफ. मानेकशॉ थे।
3. पाकिस्तान की पूर्वी कमांड की बागडोर लेफ्टिनेंट जनरल ए.ए.के. नियाजी के हाथ में थी।
4. भारत के मिग-21, हंटर, कनबैरा और पाकिस्तान के एफ-86 सैवर जेट हवाई जहाज।

19.4

1. नौ पैदल सैन्य टुकड़ी पैदल सेना की नौ डिवीजन
2. लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा
3. आपरेशन ट्राइडेंट और ऑपरेान पाइथन।
4. इसका उद्देश्य कराची बंदरगाह को तबाह करना था जिससे पाकिस्तानी फौज पूर्वी पाकिस्तान तक पहुँच नहीं पाए।
5. INS विक्रांत भारत का हवाई जहाज ले जाने वाला जलपोत था।
6. पश्चिमी नौसैनिक कमांड वाइस एडमिरल एस.एन. कोहली और पूर्वी नौसैनिक कमांड वाइस एडमिरल एन. कृष्णन के नेतृत्व में थी।

19.5

1. पाकिस्तान ने 16 दिसंबर 1971 को आत्मसमर्पण किया।
2. इस पत्र पर पाकिस्तानी पूर्वी सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल ए.ए.के. नियाजी ने हस्ताक्षर किए थे।
3. इस युद्ध में पूर्वी पाकिस्तान आजाद हुआ और बांग्लादेश नामक देश का जन्म हुआ।
4. इस युद्ध से हमें यह सीखने को मिलता है अच्छे नेतृत्व, प्रभावी यातायात, सही रणनीति और सेना के सभी अंगों के समन्वय के साथ देश की जनता का सहयोग भी युद्ध जीतने के लिए आवश्यक है।